Ijfans International Journal Of Food And Nutritional Sciences
ISSN PRINT 2319 1775 Online 2320 7876
Research Paper © 2012 IJFANS. All Rights Reserved, Journal UGC CARE Listed (Group-I) Volume 10, Issue 08, 2021

SHARM EL-SHEIKH CONFERENCE 2009: REBUILDING A NEW WORLD ORDER IN THE AGE OF CLASH OF CIVILIZATIONS

शर्म-अल-शेख सम्मेलन-2009: सभ्यताओं के संघर्ष के दौर में नई विश्व व्यवस्था का पुनर्निर्माण

डॉ. विनोद कुमार
एल.एल.बी, एम.एम., एम.फिफल्., पीएच.डी.
पोस्ट डॉक्टोरेट सीनियर अकेडमिक रिसर्च,
नेट एवं व्याख्याता राजनीति विज्ञान विभाग
राजकीय महाविद्यालय, बहादुरगढ़

सारांश : इस शोध पत्रा के माध्यम से शर्म-अल शेख सम्मेलन 2009 का समीक्षात्मक अध्ययन किया गया है इस मंच के माध्यम से सदस्य राष्ट्रों ने एक न्यायपूर्ण तथा तर्कसंगत विश्व व्यवस्था का दर्शन विकसित किया जो सदस्य राष्ट्रों की समाजिक तथा आर्थिक आवश्यकताओं तथा उद्देश्यों की पूर्ति करने में सहायक हो। इस सम्मेलन का मुख्य विषय ‘शांति और विकास के लिए अन्तर्राष्ट्रीय एकजुटता’ रखा गया। सम्मेलन के अन्तिम घोषणा पत्रा में राष्ट्र प्रमुखों ने अन्तर्राष्ट्रीय सूरक्षा तथा निरस्त्रीकरण शान्ति निर्माण और शान्ति स्थापना, मानवाधिकार और लोकतन्त्रा, मध्यपूर्व में बिगड़ती स्थिति जिसका मूल कारण फिलिस्तीन है, संयुक्त राष्ट्र संघ का लोकतान्त्रिकरण, राष्ट्रों पर एक तरफा प्रतिबन्ध। विश्व आर्थिक संकट, अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर विकासात्मक लक्ष्यों, खाद्य सूरक्षा अफ्रीका के लिए विशेष कोष, महामारी, नागरिक समाज, पर्यावरण परिवर्तन, ऊर्जा सूरक्षा, मानव तस्करी, अन्तर्राष्ट्रीय आंतकवाद तथा विश्व सभ्यताओं के मध्य शान्ति तथा विकास के लिए वार्ता को आगे बढ़ाने जैसे मुद्दों पर भारत सहित सभी सदस्य राष्ट्रों के प्रतिनिधियों ने अपने महत्वपूर्ण सूझाव प्रस्तुत किए। जहाँ तक हिन्दुस्तान की भूमिका और इसके परिणामों की बात है तो इस संदर्भ में इस लेख में विस्तार से विवेचना की गई है। यह शोध-पत्रा अन्तर्राष्ट्रीय सै(न्तिक समीक्षा, जनवरी-जून 2014 में भी प्रकाशित है।

संकेताक्षर: सभ्यताओं का संघर्ष, विश्व व्यवस्था, शान्ति और विकास, लोकतांत्रिकरण, मानव तस्करी, अन्तर्राष्ट्रीय आतंकवाद, समग्र तार्ता।

शोध प्रविधि: इस शोध पत्रा को पूर्ण करने के लिए मुख्य रूप से द्वितीय स्रोतों का सहारा लिया गया है। इनमें पत्रिकाओं में प्रकाशित शोध पत्रा, अनेक पुस्तकें, गुटनिरपेक्ष आन्दोलन के सम्मेलनों में पारित हुए विभिन्न दस्तावेजा का सहारा लिया गया है। इसके अतिरिक्त सामान्य अवलोकन के माध्यम से भी विषय का विश्लेषण किया गया है। इस गुणात्मक अनुसंधान प(ति के माध्यम से मैंने इस सम्मेलन में भाग लेने वाले राष्ट्राध्यक्षों तथा राष्ट्र प्रमुखों के वक्तव्यों तथा अभिभाषणों का अवलोकन करके अपना विश्लेषण प्रस्तुत किया है।

शोध प्रश्न

- सभ्यताओं के संघर्ष के दौर में क्या गुटनिरपेक्ष आन्दोलन एक नई विश्व व्यवस्था की स्थापना कर पाएगा?
- संयुक्त राष्ट्रसंघ का लोकतांत्रिकरण किस प्रकार किया जा सकता है?
- निरस्त्रीकरण की दिशा में भारत का क्या योगदान रहा?
- आर्थिक संकट से उभरने के लिए भारत ने क्या सुझाव प्रस्तुत किया?
- आतंकवाद से निपटने के लिए भारत की क्या रणनीति रही?

IJFANS
International Journal of
Food And Nutritional Sciences
Official Publication of International Association of Food and Nutrition Scientists

परिचयः शर्म अल-शेख एक प्रसि('शांति नगर' के रूप में जाना जाता है जहाँ के आश्रय स्थल संसार के अनेक पर्यटकों को आकर्षित करते हैं क्योंकि यहाँ पर सुन्दर समुद्री तट, आकर्षक आश्रय स्थल तथा गोताखोरी स्थल स्थत हैं यह शहर अक्सर उच्च स्तरीय अन्तर्राष्ट्रीय शिखर सम्मेलनों की मेजबानी करता है। मिस्र प्रशासन इस शहर में वैश्विक और क्षेत्राीय नेताओं जैसे अमेरिका, कतर, यूरोप और मध्यपूर्व के प्रतिनिधिमंडलों को गोपनीय रूप से बैठकें करने की अनुमति प्रदान करता है। जिससे मिस्र का प्रभाव और सुदृढ़ हुआ है। ऐतिहासिक काल के अधिकांश समय तक, अत्यधिक प्रतिकूल जलवायु के कारण शर्मअल शेख शहर निर्जन रहा, परन्तु अकाबा की खाड़ी के संकरे प्रवेश द्वार पर रणनीतिक स्थिति के कारण इसे आधुनिक समय में महत्व प्राप्त हुआ है। यह प्रवेश द्वार शर्म-अल-शेख की खाडी से 14 मील उत्तर-पूर्व में, तिरान जलडमरू पर स्थित है यह जलडमरू छोटे द्वीपों और प्रबल भित्तियों से घिरा हुआ है जिसके कारण इसकी लोकप्रियता और बढ़ जाती है इसके अतिरिक्त यह समुद्री मार्ग इजराइल को हिंद महासागर तक पहुचेने का एकमात्रा रास्ता प्रदान करता ही, इसी कारण शर्म-अल-शेख ऐतिहासिक रूप से स्वेज संकट और छः दिवसीय यु(जैसे संघर्षों का एक प्रमुख केन्द्र बिंदु रहा है।

गुटनिरपेक्ष आन्दोलन का 15वाँ शिखर सम्मेलन मिस्र के शर्म-अल-शेख में 15-16 जुलाई, 2009 को सम्पन्न हुआ।[1] शिखर सम्मेलन के मेजबान मिश्र के राष्ट्रपति होस्नी मुब्बारक ने संगठन के अध्यक्ष का कार्यभार क्यूबा के राष्ट्रपति राउल कास्त्राो से उद्घाटन समारोह में ग्रहण किया।[2] सम्मेलन में इरान को 2012 में होने वाले नैम शिखर सम्मेलन का मेजबान भी चुनने पर सहमति जताइ गई तथा अर्जेनटीना व विश्व शांति परिषद् को गुटनिरपेक्ष आन्दोलन के पर्यवेक्षक देशों व संगठन के समूह में शामिल किया गया। इस प्रकार नैम के पर्यवेक्षक देशों की संख्या 16 व संगठनों की संख्या 9 हो गई।[3] 16 जुलाई, 2009 को सम्मेलन में जो घोषणा-पत्रा स्वीकार किया गया वह अब तक का सबसे संक्षिप्त, परन्तु सटीक घोषणा-पत्रा था। इस घोषणा-पत्रा कि मूल भावना यह थी क सदस्य राष्ट्र वर्तमान विश्व की प्रमुख समस्याओं के प्रति एक सामूहिक दृष्टिकोण व कार्य योजना को स्वीकार करने के लिए सहमत हैं। सदस्य राष्ट्रों ने वैश्विक वित्तीय संकट से निपटने की रणनीति पर चर्चा की। इसके अतिरिक्त घोषणा-पत्रा में विश्व शांति व सुरक्षा, निरस्त्राीकरण, मानवाध्किार, लोकतन्त्रा, पिफलिस्तीन समस्या, संयुक्त राष्ट्र सुधर, विकास, महामारी, नागरिक समाज, जलवायु परिवर्तन, उफर्जा समस्या, मानव अंगों की तस्करी, अन्तर्राष्ट्रीय आतंकवाद, नेल्सन मंडेला अन्तर्राष्ट्रीय दिवस को मान्यता की घोषणा और सभ्यताओं व ध्र्मों के आपसी संवाद जैसे विषयों व मुद्दों पर नैम की स्थिति व इसके लक्ष्यों को भी रेखांकित किया गया।[4]

इस सम्मेलन में भारत की महत्वपूर्ण भूमिका रही। प्रधनमंत्राी मनमोहन सिंह ने गुटनिरपेक्ष आन्दोलन की प्रासंगिकता को रेखांकित करते हुए कहा-

वर्ष 1961 में आयोजित निर्गुट आन्दोलन के प्रथम सम्मेलन में भारत के प्रथम प्रधनमंत्राी एवं इस आन्दोलन के प्रवर्तक पंडित जवाहर लाल नेहरू ने कहा था कि प...यहाँ इस सम्मेलन में एकत्रा हुए राष्ट्रों की शक्ति न तो सैन्य शक्ति है और न ही आर्थिक शक्ति, पिफर भी यह एक शक्ति है जिसे हम नैतिक शक्ति कह सकते हैं।:र ये शब्द आज भी सार्थक हैं। इतिहास गवाह है कि गुटनिरपेक्षता की संकल्पना एक ऐसी संकल्पना है जो निरंतर विकसित होती है और ध्ुंध्ली नहीं पड़ती है। आज हमारे समक्ष जो चुनौतियाँ हैं उनका सामना करते हुए हमें इस आंदोलन को और आगे बढ़ाना चाहिए। आज समूचे विश्व में बदलाव आया है और अब चुनौतियां और अध्कि जटिल हो गई हैं। पंडित नेहरू ने जिस नैतिक शक्ति की बात की थी वह शक्ति विचारों की शक्ति तथा न्याय और औचित्य के सि(ान्तों में पूर्ण आस्था से मिली थी। हम इस शक्ति का प्रयोग मानव जाति के सामूहिक हित के लिए कैसे कर सकते हैं इस संबंध में गुटनिरपेक्ष आन्दोलन के सदस्यों को अवश्य ही विचार करना चाहिए।र[5]

घोषणा-पत्रा में संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद के विस्तार के बारे में कहा गया कि इसमें जल्द से जल्द सुधर की आवश्यकता है ताकि इस संगठन को अध्कि प्रभावी तथा आज की परिस्थितियों के अनुकूल बनाया जा सके। इसका अभिप्राय यह है कि परिषद के विस्तार और कार्यप्रणाली में सुधर की बात गुटनिरपेक्ष देशों की प्राथमिकता में रहनी चाहिए। कुछ गुटनिरपेक्ष राष्ट्रों पर लगाए गए प्रतिबन्धें को खारिज करते हुए यह निर्णय लिया गया कि ये प्रतिबन्ध अन्तर्राष्ट्रीय कानून और संयुक्त राष्ट्र चार्टर के विपरित हैं।[6] भारत ने 21वीं शताब्दी

के लिए एक वृहद सुरक्षा परिषद और उसकी स्थाई, अस्थाई दोनों प्रकार की सदस्यता में विस्तार के अपने संकल्प को दोहराया तथा अन्तर्राष्ट्रीय शांति और सुरक्षा के लिए विकासशील देशों के योगदान की चर्चा की। साथ ही वर्तमान समय के भू-राजनीतिक यथार्थों को बेहतर ढंग से दर्शाने के लिए दोनों श्रेणियों में विकासशील देशों के बढ़ते प्रतिनिध्त्वि की आवश्यकता को भी रेखांकित किया।[7] सम्मेलन में अपने विचार रखते हुए मनमोहन सिंह ने कहा पफनिर्णय निर्माण प्रक्रियाएं, चाहे संयुक्त राष्ट्र संघ की हों या अन्तर्राष्ट्रीय वित्त संस्थाओं कीऋ साठ वर्ष से भी अध्कि अवध् िपहले लिखे गए चार्टर के आधर पर जारी हैं जबकि तब से लेकर अब तक विश्व में कापफी परिवर्तन आया है। विकासशील देशों का अंतर्राष्ट्रीय संस्थाओं की निर्णयन प्रक्रियाओं में पूर्ण प्रतिनिध्त्वि अवश्य होना चाहिए। यदि उन्हे प्रभावी रहना है और अपना औचित्य सि(करना है तो उन्हें निरंतर एकीकृत विश्व में अपनी भूमिका निभाने की आवश्यकता है।ब्[8] दरअसल सुरक्षा परिषद की संरचना और प्रक्रियाओं में लंबे अरसे से व्यापक बदलाव की जरूरत है। इस काम में जितनी ज्यादा देरी की जा रही है, आज की वास्तविक दुनियां में इस संगठन का वजन उतना ही घट रहा है। अन्तर्राष्ट्रीय मामलों के विशेषज्ञ रमेश ठाकुर का मानना है कि इस संदर्भ में एक समन्वित रणनीति अपानाने की आवश्यकता है। इसके लिए एक तो गाँधी जी के बेहद सपफल असहयोग आन्दोलन की रणनीति अपनाई जा सकती है जिसके आधर पर उन्होंने ब्रिटिश साम्राज्य को नत-मस्तक कर दिया था। दूसरे, यह मानकर चलना होगा कि सुरक्षा परिषद में सुधर के लिए कड़े तेवरों वाली रणनीति ;हार्डबाल टैक्स्सिद्ध अपनानी होगी और जो देश ऐसे राजनयिक तेवर अपनाने के योग्य या इसके लिए तैयार नहीं हैं, वे असल में सुरक्षा परिषद की स्थायी सदस्यता के दावेदार भी नहीं हैं। इन दोनों रणनीतियों को अगर सही ढंग से अपनाया जाये तो निश्चित रूप से कुछ सकारात्मक परिणाम आऐगें।[9]

इसके लिए समूह-4 देशों को सोचा-समझा और साझा असहयोग का अभियान चलाना चाहिए। इसके लिए उन्हें आक्रामक होने की आवश्यकता नहीं है, बल्कि जो काम गाँधी जी ने किया था, उसी तरह का सकारात्मक असहयोग करना चाहिए। ऐसा करते हुए उन्हें परिषद् में होने वाले उन चुनावों में भाग लेने से इनकार कर देना चाहिए, जिनमें उन्हें अस्थाई सदस्य के रूप में बुलाया जाता है। पर ऐसा न करके ये देश परिषद् की गतिविध्यिों में शामिल होकर और दो साल के लिए चयनित सदस्य बनकर सुरक्षा परिषद के वर्तमान ढाँचे को वैध्ता प्रदान करते हैं। इसके विपरित यदि ये चारों देश एक दशक या इससे ज्यादा समय के लिए परिषद् से बाहर रहते हैं, तो इस तरह वे परिषद् को अमान्य कर सकते हैं।[10] परन्तु इसके साथ ही समूह-4 देशों को इस बिन्दू पर भी ध्यान देना होगा कि यदि किसी देश पर बुरे बर्ताव का आरोप है तो उसका नाम सुरक्षा परिषद् के पास भेजने या उसका उल्लेख करने के मामले पर मतदान में हिस्सा लेने से इनकार करना चाहिए। यहाँ यह भी स्पष्ट करना होगा कि इस प्रकार के मुद्दों पर इन देशों को आक्रामक होने से बचना चाहिए। उन्हें ईरान या उत्तर कोरिया की परमाणु नीतियों का न तो समर्थन करना चाहिए और न ही उनके बचाव में बोलना चाहिए। इसके अतिरिक्त प्रत्येक को यह विनम्रतापूर्वक जरूर याद दिलाना चाहिए कि चूंकि उन्हें सुरक्षा परिषद् की वैध्ता में पूर्ण विश्वास नहीं है, लिहाजा मत विभाजन की किसी स्थिति में वे अनुपस्थित रहेंगे। इसके अतिरिक्त संयुक्त राष्ट्र शान्ति अभियानों के संदर्भ में भी यह रणनीति अपनाई जा सकती है। चूंकि संयुक्त राष्ट्र के सभी शांति अभियान सुरक्षा परिषद की मंजूरी से भेजे जाते हैं, इसलिए समूह-4 देशों को उन अभियानों में अपने सैनिक भेजने और संयुक्त राष्ट्र संघ की कार्यवाइयों में कोई भागीदारी करने से तब तक इनकार कर देना चाहिए, जब तक कि सुरक्षा परिषद का पूनर्गठन नहीं किया जाता। चूंकि शांति अभियानों को चलाने के लिए ध्न भी ऐच्छिक रूप से आबंटित होता है, इसलिए समूह-4 देशों को ऐसा योगदान करने से भी मना करना चाहिए।[11] इस प्रकार से संयुक्त राष्ट्र और इसके प्रमुख अंगों में तत्काल सुधर लाने के लिए सामूहिक रूप से मिलकर काम करना होगा।

सम्मेलन में निरस्त्रीकरण के लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए परमाणु शस्त्रा सम्पन्न राष्ट्रों से सकारात्मक एवं रचनात्मक अंतःक्रिया तथा ठोस कार्यवाही करने पर बल दिया गया। सदस्य राष्ट्रों ने पूर्ण निरस्त्रीकरण की बात कही और विकसित राष्ट्रों से अपने परमाणु भण्डारों में कटौती करने का आग्रह किया।[12] भारत ने स्वीकार किया कि भारत एक परमाणु सम्पन्न देश है, पिफर भी भारत का मानना है कि व्यापक विनाश के हथियारों के विरु(सबसे अच्छा तरीका निरस्त्रीकरण ही है। इसके साथ भारत ने यह भी कहा कि शान्तिपूर्ण उद्देश्यों के लिए

Research Paper © 2012 IJFANS. All Rights Reserved, Journal UGC CARE Listed (Group-I) Volume 10, Issue 08, 2021

परमाणु उफर्जा के प्रयोग का अध्किार सभी राष्ट्रों को है।[13] जलवायु परिवर्तन के संदर्भ में गुटनिरपेक्ष आन्दोलन के सदस्यों ने विकसित देशों के हितों की रक्षा हेतु सामान्य किन्तु विभेदीकृत उत्तरदायित्व के सि(ान्त को स्वीकार करने पर बल दिया। इस सि(ान्त का अभिप्राय यह है कि पर्यावरण को प्रदूषित करने के लिए विकसित देश जिम्मेदार हैं इसलिए इस समस्या के समाधन के उपायों जैसे- हानिकारक गैसों के उत्सर्जन में कमी, वित्तीय तथा तकनीकी संसाध्नों का हस्तांतरण आदि में विकसित देशों का दायित्व अध्कि होगा।[14] मनमोहन सिंह ने भारतीय पक्ष को मजबूती से रखते हुए कहा फ्दो शताब्दियों से भी अध्कि समय से औद्योगिक गतिविध्यिों और विकसित देशों की निरंतर बदलती जीवन शैली के परिणामस्वरूप ग्रीन हाउस गैसों के संचन के कारण हमारी पृथ्वी को खतरा उत्पन्न हो गया है। जलवायु परिवर्तन की समस्या का कोई उचित समाधन करके इस महत्वपूर्ण दायित्व को पूर्ण करना चाहिए। जलवायु परिवर्तन से विकासशील देश सबसे अध्कि प्रभावित हुए हैं। जलवायु परिवर्तन की समस्या से निपटने की दिशा में अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर किए गए प्रयासों की सपफलता सुनिश्चित करने में इनका सर्वाध्कि योगदान है। हम पर्यावरण के संरक्षण के प्रति अपना दायित्व दूसरे देशों की तुलना में अध्कि समझते हैं। हम इस संबंध् में पहले से अपना महत्वपूर्ण योगदान दे रहे हैं परन्तु जलवायु परिवर्तन की समस्या से निपटने के लिए की जा रही कार्यवाही से विकासशील देशों की निर्ध्नता की समस्या चिरस्थाई नहीं होनी चाहिए्र।[15] इस प्रकार जलवायु परिवर्तन को विश्व के समक्ष सबसे ज्वलंत चुनौती के रूप में मानते हुए नेताओं ने वैश्विक तापमान को औद्योगिक युग के प्रारम्भ के तापमान के स्तर से नीचे ले आने पर संयुक्त प्रतिब(ता व्यक्त की।

सम्मेलन में आतंकवाद को दुनिया की शान्ति और सुरक्षा के समक्ष उपस्थित सबसे बड़ी चुनौतियों में से एक बताया और प्रत्येक प्रकार के आतंकवाद की भर्त्सना की गई। सदस्य राष्ट्रों ने कहा कि आतंकवाद के विरु(वैश्विक संध्यिों और मसौदों को वे पूरी तरह से लागू करें। अर्थात् 118 सदस्य राष्ट्रों वाले समूह ने आतंकवाद के सभी प्रकारों से लड़ने के लिए संयुक्त राष्ट्र घोषणा- पत्रा, अन्तर्राष्ट्रीय कानून और संबंध्ति अन्तर्राष्ट्रीय समझौतों के अनुसार गुटनिरपेक्ष आन्दोलन की एकजुटता मजबूत करने पर सहमति जताई, चाहे इसे किसी ने भी और कही भी अंजाम दिया हो। शिखर वार्ता की घोषणा में इस बात पर भी जोर दिया गया कि आतंकवाद को किसी ध्र्म, राष्ट्रीयता, नागरिकता या जातीय समूह से नहीं जोड़ा जाना चाहिए। इस वैश्विक चुनौती को समाप्त करने के लिए अन्तर्राष्ट्रीय समुदाय की संयुक्त तथा संगठित प्रतिक्रिया सम्बंधी मुद्दों पर गुटनिरपेक्ष देशों के सदस्यों के दृष्टिकोणों और रुझानों को ध्यान में रखते हुए संयुक्त राष्ट्र संघ के तत्वाधन में एक व्यापक अन्तर्राष्ट्रीय आतंकवाद सम्मेलन की आवश्यकता को रेखाँकित किया। उदाहरण के तौर पर होस्नी मुबारक ने 1986 में यूरोपीय संसदीय सभा की परिषद् में इस प्रकार का प्रस्ताव रखा था।[16] भारत के प्रधनमंत्राी मनमोहन सिंह ने गुटनिरपेक्ष देशों को संबोध्ति करते हुए आतंकवाद के विरू(सामूहिक रूप से सख्त कदम उठाने का आग्रह किया। उन्होंने स्पष्ट किया कि यदि आतंकवाद के विरू(कोई ठोस कार्यवाही नहीं की गई तो विकासशील देशों के इस समूह की प्रासंगिकता का पतन होना शुरू हो जाएगा।[17] मनमोहन सिंह ने अपने भाषण में यह भी स्पष्ट किया कि फउग्रवाद, असहिष्णुता और आतंकवाद हमारे शत्राु हैं तथा वे हमें और हमारे आन्दोलन को ध्वस्त करना चाहते हैं। हाल के वर्षों में आतंकवादी समूह और अध्कि सक्रिय, संगठित और दुस्साहसी हो गए हैं। आतंकवादियों और उन लोगों को जो उन्हें सहायता देते हैं और उन्हें उकसाते हैं, न्यायिक प्रक्रिया के अंतर्गत लाना होगा। आतंकवाद के ढाँचे को बिल्कुल ध्वस्त किया जाना चाहिए और उनके लिए कोई सुरक्षित आश्रय नहीं बचना चाहिए क्योंकि वे किसी निश्चित प्रयोजन, समूह या ध्र्म का प्रतिनिध्त्वि नहीं करते है। अब वह समय आ गया है कि हम अंतर्राष्ट्रीय आतंकवाद पर व्यापक सम्मेलन को सहमति दें।[18] इस प्रकार सम्मेलन के अन्तिम घोषणा-पत्रा में भारत के आह्वान को प्रमुखता दी गई।

सम्मेलन में पिफलिस्तीन पर जारी घोषणा-पत्रा में गुटनिरपेक्ष देशों ने पिफलिस्तीनी लोगों के अपनी स्वतन्त्राता प्राप्त करने के लिए जारी संघर्ष को अपना समर्थन देने की वचनब(ता की घोषणा की। घोषणा-पत्रा में 1967 के बाद से अरब भूमि पर इजराइली कब्जे को समाप्त किये जाने की माँग भी की गई। इसमें दशकों से जारी मध्य-पूर्व की समस्या के स्थाई समाधन के लिए इजराइल- पिफलिस्तीन संघर्ष की समाप्ति की जरूरत पर बल दिया गया।[19] मनमोहन सिंह ने अपने संदेश में कहा कि फ्मैं अरब देशों के प्रति भारत के लोगों की सुदृढ़ भाईचारे और एकता की भावना को व्यक्त करना चाहता हूँ। मैं महामहिम राष्ट्रपति महोदय श्री होस्नी मुब्बारक को गुटनिरपेक्ष आंदोलन की अध्यक्षता करने के लिए बधई देता हूँ। अध्यक्ष महोदय, हम जानते हैं कि

Ijfans International Journal Of Food And Nutritional Sciences
ISSN PRINT 2319 1775 Online 2320 7876
Research Paper © 2012 IJFANS. All Rights Reserved, Journal UGC CARE Listed (Group-I) Volume 10, Issue 08, 2021

आपकी गहरी सोच और मार्गदर्शन हमारे आन्दोलन को प्रगति के पथ पर और आगे ले जाएगी। आपको भारत की ओर से पूरा सहयोग मिलेगा। आज जब अरब की जमीन पर यह बैठक हो रही है तो मैं पिफलिस्तीन की जनता के दुःख से अछूता कैसे रह सकता हूँ जिन्होंने कापफी कठिनाइयां और यातनाएं झेली हैं। हमारे आन्दोलन में पिफलीस्तीन की समस्या के व्यापक न्यायपूर्ण, चिरस्थायी और शान्तिपूर्ण समाधन के लिए और अध्कि प्रयास किए जाने चाहिए।[20]

सम्मेलन में दक्षिण अप्रफीका के पूर्व राष्ट्रपति नेल्सन मंडेला के जातीय एवं नस्ल विरोधी लोकतांत्रिक राज्य की स्थापना के लिए किए गए प्रयासों की सराहना की गई। सदस्य देशों ने अप्रफीका महाद्वीप में एकता स्थापित करने व इससे स्वतंत्रा कराने में मंडेला की भूमिका व प्रयासों की सराहना करते हुए रंगभेद के विरू(मंडेला के लम्बे संघर्ष व अप्रफीकी महाद्वीप के हितों की रक्षा में उनकी भूमिका पर एक घोषणा-पत्रा भी जारी किया। इस घोषणा-पत्रा में मंडेला के जन्म दिवस 18 जुलाई को फ्नेल्सन मंडेला अंतर्राष्ट्रीय दिवसय् के रूप में मनाए जाने की घोषणा की गई।[21] अप्रफीकी महाद्वीप के विकास के लिए सभी राष्ट्राध्यक्षों ने अपनी प्रतिब(ता दोहराई जो कि संयुक्त राष्ट्र संघ के 63 वे सत्रा के दौरान महासभा में स्वीकार किया था। विशेषकर विवादों के समाधन, शांति और सुरक्षा, विकास एवं गरीबी निवारण, लोकतन्त्रा की स्थापना, स्थाईत्व, कानून के शासन की स्थापना आदि।[22] इस संदर्भ में मनमोहन सिंह ने भारतीय दृष्टिकोण को व्यक्त करते हुए कहा फ्अप्रफीकी महाद्वीप में मानव जाति को दूसरे महाद्वीपों की तुलना में अध्कि चुनौतियों का सामना करना पड़ रहा है गुटनिरपेक्ष देशों को अप्रफीका की समस्याओं के साथ-साथ इसकी संभावनाओं को अन्तर्राष्ट्रीय विकास कार्यसूची में प्राथमिकता दिलाने का प्रयास करना चाहिए। अप्रफीका को अंतर्राष्ट्रीय आर्थिक प्रक्रियाओं में सक्रिय भागीदार बनाना नैतिक अनिवार्यता है। इससे इसकी अर्थव्यवस्था पर भी अच्छा असर पड़ेगा। भारत अप्रफीका के साथ व्यापक रूप से भागीदारी विकसित करने के लिए वचनब(है। इस संबंध् में पहल के रूप में हमने वर्ष 2008 में दिल्ली में भारत- अप्रफीका मंच सम्मेलन आयोजित किया था। हम उन क्षेत्राों में गुटनिरपेक्ष आन्दोलन के अन्य सदस्य देशों के साथ अपनी भागीदारी बढ़ाने की दिशा में कार्य करने के लिए तैयार हैं जिनमें अप्रफीका को प्राथमिकता दी गई है।य्[23]

घोषणा-पत्रा में मानवजाति के विश्वव्यापी गुणों के आधर पर मानवाध्किारों को समर्थन देने की बात को दोहराया और कहा कि सभी देशों के लिए लोकतन्त्रा का एक ही प्रतिमान लागू नहीं हो सकता। किसी देश के आन्तरिक मामलों में हस्तक्षेप करने के लिए लोकतान्त्रिक व मानवाध्किारों के मुद्दों को एक राजनैतिक हथियार के तौर पर प्रयोग करने का भी इसमें विरोध् किया गया।[24] एक तरपफ गुटनिरपेक्ष आन्दोलन के नेताओं ने जहाँ सम्मेलन के दौरान वैश्विक मुद्दों पर चर्चा की, वहीं दूसरी ओर मनमोहन सिंह की पत्नी गुरशरण कौर सहित इन नेताओं की पत्नियों ने भी एक समानांतर बैठक की। इस बैठक में मानव तस्तकरी और महिलाओं की अन्य समस्याओं पर विचार विमर्श किया गया। महिलाओं के प्रति सभी प्रकार के भेदभावों को मिटाने और कार्यवाही के लिए मानवाध्किारों के वैश्विक मानक निर्धरित किये गए। इस में समानता पर आधरित और भेदभाव रहित व्यवस्था को स्पष्ट परिभाषित किया गया है जिससे असमानता के किसी न किसी रूप में बने रहने की समस्या को हल करने का व्यापक समाधन निकालने में सपफलता मिल सकती है।[25] अतः स्पष्ट है कि लैंगिक समानता एवं महिलाओं के सशक्तिकरण की दिशा में यह बैठक प्रमुख सीमा चिन्ह साबित होगी।

घोषणा-पत्रा में कहा गया कि विश्व आर्थिक संकट ने औद्योगिक देशों की अपेक्षा-गुटनिरपेक्ष और विकासशील देशों को अत्यध्कि प्रभावित किया है और यह विकसित देशों द्वारा अन्तर्राष्ट्रीय वित्त एवं आर्थिक व्यवस्था के अविवेकपूर्ण संचालन एवं ढाँचागत अनियंत्राण से उत्पन्न हुआ है। इस प्रकार अन्तर्राष्ट्रीय अर्थव्यवस्था वित्त प्रणाली और वैश्विक आर्थिक संकट के मद्देनजर प्रकाश में आए दोषों पर ध्यान देने के लिए गुटनिरपेक्ष देशों के सदस्यों को चीन और 77 देशों के समूह के साथ खड़ा होना चाहिए ताकि अन्तर्राष्ट्रीय वित्तीय संस्थानों सहित अन्तर्राष्ट्रीय निर्णय, क्षमता और नियम रचना में विकासशील देशों की आवाज और सहभागिता को और अध्कि बढ़ाया जा सके। आर्थिक संकट के समाधन के लिए उठाए गए सभी कदमों से यह सुनिश्चित होना चाहिए कि वे विकासशील देशों की कीमत पर नहीं लिये गए हों।[26] अर्थात् इस संकट के

समाधन की प्रक्रिया में विकासशील देशों के हितों पर ध्यान देना आवश्यक है। गुटनिरपेक्ष आन्दोलन के निवर्तमान अध्यक्ष क्यूबा ने दुनियां के सभी देशों से वित्तीय संकट से निपटने के लिए प्रभावी उपाय खोजने का अनुग्रह किया। उन्होंने कहा कि नैम को समानता और विकास के लिए नई अन्तर्राष्ट्रीय आर्थिक व्यवस्था की स्थापना को बढ़ावा देना चाहिए। पिफलीपींस की राष्ट्रपति ग्लेरिया आरोया ने कहा कि विश्व आर्थिक संकट की समस्या से ग्रस्त है और गुटनिरपेक्ष देशों के बीच स्थिति से निपटने के लिए वृहद सहयोग की जरूरत है।[27] भारत के प्रधनमंत्री मनमोहन सिंह ने इस संदर्भ में भारत के पक्ष को विकासशील देशों के समक्ष बड़े ही तार्किक ढंग से रखा। उन्होंने कहा फ्यह संकट सबसे भयंकर है जो उन्नत औद्योगिक अर्थव्यवस्थाओं के कारण उत्पन्न हुआ है। परन्तु इसका सबसे बुरा असर हमारे आन्दोलन के सदस्य देशों की विकासशील अर्थव्यवस्थाओं पर पड़ा। विश्व मंदी के कारण विकसित देशों के बाजारों में संरक्षणवाद को मजबूती मिली, विकासशील देशों के निर्यात में भारी कमी आई और तीसरी दुनिया के देशों में)ण और पूँजी का प्रवाह अवरु(हो गया।े[28] मनमोहन सिंह ने सदस्य राष्ट्रों को आगाह किया कि फ्वैश्वीकरण के पफायदे और)ण भार में इतना अध्कि अनुचित अनुपात है कि हमारी अर्थव्यवस्थाओं के लिए भी इस संकट से निपटना कठिन हो जाएगा। यदि इस संकट की घड़ी से सावधनीपूर्वक नहीं निपटा जाता है और अत्यध्कि चल निध् ;लिक्विडिटीद्ध के कारण सौदेबाजी की गतिविध्याँ पुनः सक्रिय हो जाती हैं तो हमें लम्बे समय तक मंदी से गुजरना पड़ सकता है। विशेष रूप से विकासशील देशों में निरंतर मंदी का दौर बने रहने से हमारी जनता को निर्ध्नता की दयनीय स्थिति को झेलना पड़ेगा और पोषण, स्वास्थ्य व शिक्षा की दृष्टि से उनका स्तर और अध्कि गिर जाएगा। हमने इतने कष्टों और बलिदानों के बाद जो प्रगति की है वह ध्ूमिल हो जाएगी। हमारे इस सहस्त्राब्दि के विकासात्मक लक्ष्य मृग मरीचिका बनकर रह जाएंगे।े[29] उन्होंने मौजूदा संकट से उबरने के लिए एक नई अन्तर्राष्ट्रीय वित्त व्यवस्था की जरूरत को रेखांकित करते हुए कहा कि फ्विश्व अर्थव्यवस्था में सुधर लाने के लिए किए गए सुनियोजित उपायों में विकासशील देशों की समस्याओं को ध्यान में रखा गया है। इनमें खाद्य सुरक्षा व उफर्जा सुरक्षा, पर्यावरण और अन्तर्राष्ट्रीय स्तर की संस्थाओं में सुधर संबंधी चुनौतयों को शामिल किया गया है। ये सभी घटक आर्थिक संकट में अंतर्निहित है और इस स्थिति से व्यापक रूप से और तत्काल निपटना होगा। हमें नियम आधरित बहुपक्षीय व्यापार प्रणाली और फ्दोहा राउँडः में हुए संतुलित और निष्पक्ष समझौते के समयपूर्व समापन से भारी जोखिम हैं। अन्तर्राष्ट्रीय शासन तंत्रा में न तो राष्ट्रों की बढ़ती परस्पर निर्भरता को और न ही समकालीन तथ्यों को ध्यान में रखा गया है। यद्यपि हमारी सुव्यवस्थित अंतर्राष्ट्रीय व्यवस्था है लेकिन पिफर भी अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति विश्व की अध्कांश जनता की आशाओं, आकांक्षाओं का प्रतिनिध्त्वि नहीं करती। इसलिए गुटनिरपेक्ष आन्दोलन की आज महती आवश्यकता है। हमारे सदस्य देश परस्पर सहयोग, व्यापार और निवेश करके विश्व अर्थव्यवस्था में सुधर लाने में कापफी योगदान दे सकते हैं।े[30]

सम्मेलन के दौरान 16 जुलाई को भारत व पाकिस्तान के प्रधनमंत्रियों ने द्विपक्षीय वार्ता भी की। प्रधनमंत्री मनमोहन सिंह की पाकिस्तानी प्रधनमंत्री यूसुपफ रजा गिलानी से होने वाली मुलाकात के पूर्व दोनों देशों के विदेश सचिवों ने 14 जुलाई को मुंबई हमले के जिम्मेदार लोगों को न्याय के कटघरे में लाने की दिशा में हुई प्रगति की समीक्षा की। भारत के विदेश सचिव शिवशंकर मेनन और पाकिस्तानी विदेश सचिव सलमान बशीर के बीच हुई यह वार्ता आतंकवाद पर केन्द्रित रही। साथ ही इस बात पर भी चर्चा हुई कि इस्लामाबाद ने भारत के खिलापफ आतंकवाद को रोकने की दिशा में क्या कदम उठाए हैं।[31] वार्ता के दौरान दोनों प्रधनमंत्रियों ने भारत-पाकिस्तान संबन्धें को आगे बढ़ाने के लिए हर पहलू पर चर्चा की। बातचीत के बाद जारी संयुक्त वक्तव्य में कहा गया कि दोनों देश आपसी विश्वास और भरोसे का माहौल बनाने के लिए प्रतिब(हैं। दोनों नेताओं ने इस बात पर सहमति जताई कि आंतकवाद दोनों देशों के लिए प्रमुख खतरा है और आतंकवाद से लड़ने के लिए दोनों देश एक दूसरे का पूर्ण सहयोग करेंगे। मनमोहन सिंह ने मुंबई आतंकी हमलों के दोषियों को कानून के दायरे में लाने की आवश्यकता पर जोर दिया। पाकिस्तान के प्रधनमंत्री ने भारत को आश्वासन दिया कि पाकिस्तान इस संदर्भ में अपने अध्किार क्षेत्रा मे हर संभव कार्य करेगा। दोनो ही नेता इस बात पर सहमत हुए कि दोनों देश भविष्य में ऐसी किसी आतंकी ध्मकी के बारे में सही समय पर विश्वसनीय और कार्यवाही योग्य सूचना का आदान प्रदान करेंगे।[32] पाकिस्तान के प्रधनमंत्री गिलानी ने बलूचिस्तान का उल्लेख किया कि इस प्रकार के खतरे के बारे में पाकिस्तान के

Research Paper © 2012 IJFANS. All Rights Reserved, Journal UGC CARE Listed (Group-I) Volume 10, Issue 08, 2021

पास कुछ विश्वसनीय सूचना है।[33] संयुक्त वक्तव्य में कहा गया कि फ्आतंकवाद के विरु(की जाने वाली कार्यवाही को समग्र वार्ता प्रक्रिया के साथ जोड़कर नही देखा जाना चाहिए। इन्हें एक ही दायरे में नहीं रखना चाहिए।ग् इसके अतिरिक्त दोनो ही नेताओं ने स्वीकार किया कि वर्तमान समय में दोनों देशों के समक्ष विकास और गरीबी का निवारण ही वास्तविक चुनौती है। दोनों नेताओं ने अपनी पूर्ण क्षमता का दोहन करने से रोकने वाले सभी कारकों को दूर करने के प्रति प्रतिब(ता व्यक्त की और क्षेत्राीय सहयोग को बढ़ावा देने के संकल्प को दोहराया। द्विपक्षीय वार्ता में दोनों प्रधनमंत्रियों ने यह तय किया कि दोनों देशों के विदेश सचिव आवश्यकतानुसार मिलते रहेगें तथा अपनी बातचीत के निष्कर्षो से विदेश मंत्रियों को अवगत कराते रहेगें।[34] भारत-पाकिस्तान के प्रधनमंत्रियों की मुलाकात के बाद यह आशा व्यक्त की गई कि इससे मुंबई हमले के बाद दोनों देशों के संबंधें के बीच आई कटुता को दूर करने में तो मदद मिलेगी ही साथ ही द्विपक्षीय वार्ताओं में आए हुए ठहराव को भी पुनः शुरू किया जा सकेगा। अतः कापफी समय बाद देखा गया कि किसी गुटनिरपेक्ष सम्मेलन के पूर्ण सत्रा में लम्बे, उबाउफ और बोझिल भाषण नहीं हुए।

निष्कर्षः इस संपूर्ण विश्लेषण के आधार पर कहा जा सकता है कि जुलाई 2009 में शर्म-अल-शेख में आयोजित 14वां गुटनिरपेक्ष शिखर सम्मेलन भारत की वैश्विक भूमिका, वैश्विक आर्थिक मंदी, आतंकवाद की चुनौतियों का समाधान करने और वैश्विक दक्षिण के देशों के राजनीतिक, आर्थिक, सामाजिक तथा सांस्कृतिक हितों की रक्षा करने पर केन्द्रित रहा। भारत ने इस मंच के माध्यम से सदस्य राष्ट्रों से आग्रह किया कि सदस्य राष्ट्रों को सभी बहुपक्षीय मंचों के माध्यम से सभी देशों के चहुमुखी विकास तथा निरस्तीकरण की दिशा में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभानी चाहिए। भारत का मानना है कि शीयु(की समाप्ति के उपरान्त गुटनिरपेक्ष देशों का यह व्यापक मंच आज भी विश्व व्यवस्था में न्याय, समानता, स्वतन्त्राता, निष्पक्षता और विकासशील देशों की संप्रभुता बनाए रखने के लिए पहले से ज्यादा प्रासंगिक है। इसके अतिरिक्त भारत ने वैश्विक आर्थिक मंदी से निपटने के लिए पारस्परिक सहयोग विशेषकर दक्षिण-दक्षिण सहयोग को बढ़ाने की वकालत के साथ-साथ खाद्य सूरक्षा और उर्जा संकट के समाधान के लिए एक व्यापक और बहुपरतीय रणनीति अपनाने के लिए भी आह्वान किया। सभ्यताओं के संघर्ष के दौर में कोई संप्रुभता सम्पन्न राष्ट्र प्रभावित न हो, इसके लिए भारत ने समतामूलक समाज, परस्पर संवाद, सहअस्तित्व सहयोग तथा समकालीन वैश्विक संकट जैसे जलवायु परिवर्तन, आर्थिक न्याय, अन्यायपूर्ण हस्तक्षेप तथा बहुध्रुवीय विश्व व्यवस्था स्थापित करने के लिए सम्मेलन के अन्तिम घोषणा पत्रा में अपने मूल्यवान सुझाव प्रस्तुत किए। यद्यपि गुटरिरपेक्ष आन्दोलन के प्रमुख सि(ान्त भारतीय गुटनिरपेक्षता की विदेश नीति के लक्ष्यों तथा अदर्शों तथा दर्शन में सदैव परिलक्षित होती रही है। यथापि इस सम्मेलन में व्यक्त किए गए घोषणा पत्राों तथा अभिभाषणों से निश्चित रूप से यह स्पष्ट होता है कि अब भारत अपने कूटनीतिक दृष्टिकोण में एक यथार्थवादी परिवर्तन कर रहा हें इस पहल ने भारत को पाकिस्तान के साथ संवाद करने के रास्ते फिर से खोलने का अवसर प्रदान किया। वयापि भारत की स्वतन्त्रा विदेश नीति तथा राष्ट्रीय सुरक्षा के मध्य संतुलन बनाने के संदर्भ में यह सम्मेलन, भारतीय सामरिक समुदाय तथा अन्तरार्ष्ट्रीय अध्ययन संस्थानों में आलोचना का प्रमुख केन्द्र रहा। जहां तक शोध अंतराल की बात है तो यहाँ पर भारत-पाकिस्तान समग्र वार्ता, आन्दोलन के समक्ष नई चुनौतियों और अवसरों के सदंर्भ में सम्मेलन आयोजन कर्ता देश नई पहल कर सकते हैं क्योंकि बदलती हुई परिस्थितियों को अनुरूप सम्मेलनों के घोषणा पत्राों की विषय वस्तु में भी बदलाव परमावश्यक है थिंक टैंक भी इस संदर्भ में अपना योगदान दे सकते हैं।

संदर्भ एवं टिप्पणियाँ

[1] *द पायनियर*, नई दिल्ली, 16 जुलाई, 2009.

[2] *द इकॉनामिक्स टाइम्स*, नई दिल्ली, 16 जुलाई 2009.

[3] वेदप्रताप वैदिक, फ्गुटनिरपेक्ष सम्मेलन की प्रासंगिकताग्, *जनसत्ता*, नई दिल्ली, 16 जुलाई, 2009.

4 *एशियन न्यूज डाइजेस्ट*, वा. टप्प् न. 15ऋ 15-21, जुलाई, 2009, पृ. 2783.
तथा आर.के. दुबे, फ15 वां नाम शिखर सम्मेलनः वित्तीय संकट व आतंकवाद से निपटने पर रहा जोर,ै *समसामायिकी महासागर*, अंक 5, वर्ष 4, अगस्त, 2009 पृ. 55.

5 भारत के प्रधनमंत्री डॉ. मनमोहन सिंह द्वारा पंद्रहवें गुटनिरपेक्ष शिखर सम्मेलन ;शर्म-अल-शेखद्ध 15 जुलाई, 2009द्ध में दिया गया भाषण पृ. 1
स्रोतः ीजजचरूध्ध्चउपदकपंण्दपबधेत15रनसल2ी9.1ण्चकण्

6 शर्म-अल-शेख समिट् *डिक्लेरेशन*, पृ. 3.
स्रोतः 0ऽीतउमसीमीनउउपजकमबसंतंजपवदण्कवबण्1ऽइ.दंउमहलचजण्वतहण्

7 फआतंकवाद के खिलापफ निर्गुट देश एकजुटर *नवभारत टाइम्स*, नई दिल्ली, 17 जुलाई, 2009.

8 सिंह का भाषण, संख्या 5, पृ. 4.

9 रमेश ठाकुर, फ्भारत के लिए दिखाएं कड़े तेवरर, *नवभारत टाइम्स*, नई दिल्ली, 15 जुलाई, 2009.

10 वही.

11 वहीं

12 डिक्लेरेशन, संख्या 6, पृ. 2, व सि(ार्थ वर्दराजन, फ्इन शोर्टर डिक्लेरेशन, नैम होप्स पफॉर बिगर रोलर *द हिन्दू*, नई दिल्ली, 17 जुलाई, 2009.

13 संपादकीय, फ्मेकिंग नेम मोर रेलेवेन्टर, *द हिन्दु*, नई दिल्ली, 21 जुलाई, 2009.

14 इस सि(ान्त को 1992 में सम्पन्न हुए रियों के पृथ्वी सम्मेलन में स्वीकार किया गया। भारत और अन्य विकासशील देश विकसित विश्व से कानूनी रूप से बाध्यकारी सुस्पष्ट आश्वासन पर जोर दे रहे हैं जिसमें यह जिक्र हो कि एक समय सीमा के भीतर वे ग्रीन हाउस गैसों के उत्सर्जन में ठोस कमी लाएगें। विकासशील देशों का यह तर्क है कि विकसित देश सबसे बड़े प्रदूषक हैं। इसलिए जलवायु संकट का प्रभाव कम करने के लिए उन्हें बड़ी जिम्मेदारी भी उठानी चाहिए। विकासशील देश अमीर देशों से अलग से चिन्हित ठोस वित्तीय मदद पर जोर दे रहे हैं जो विदेशी मदद या कर्ज के रूप में न हो। उल्लेखनीय है कि इस उद्देश्य के लिए लगभग सौ खरब डालर की आवश्यकता होगी। परन्तु विकसित देश कम प्रदुषण करने वाली तकनीकी के हस्तांतरण में भी लाभ के अवसर तलाश रहे हैं। विकसित देश चाह रहे है कि इस उद्देश्य के लिए जरूरी ध्न बाजार से कर्ज पर उठाया जाए।
पिफप्फटिन समिट कान्प्रेंफस आपफ हैड्स आपफ स्टेट एण्ड गवर्नमेंट ऑपफ द नान-अलाईड मूवमेंट-शर्म-अल-शेख, 2009, *पफाईनल डाक्यूमेंट*, 15-16 जुलाई 2009, इजिप्ट, चैपटर प्प्रू डवलपमेंट, सोशल एण्ड ह्यूमन राइट्स इश्यूज, क्लाइमेंट चेंज, पृ.90.

15 फ15वां गुटनिरपेक्ष शिखर सम्मेलनः प्रासंगिकता लताशता एक ऐतिहासिक संगगठन,ै *हिन्दुस्तान टाइम्स*, नई दिल्ली, 15 अगस्त, 2009.

16 एस.पी. तालुकदर, फ्द पफालॉउट ऑपफ शर्म-अल-शेखः मोर लूज दैन गेनर, *इंडियन करेंट्स*, 3-9 अगस्त, 2009, पृ. 26-27.

17 फ्मनमोहन की गुटनिरपेक्ष देशों से अपीलः आतंकवाद को न दें पनाहर, *नवभारत टाइम्स*, नई दिल्ली, 16 जुलाई, 2009.

18 सिंह का भाषण, *संख्या* 5, पृ. 4.

19 पफाईनल डाक्यूमेंट्स *संख्या* 14, चैपटर प्प्रू रीजनल एण्ड सब-रीजनल पॉलिटिकल इश्यूज- मिडल ईस्ट, पृ. 55-56.
पिफलिस्तीन और इस्त्राइल के बीच का विवाद तीन भाइयों का विवाद है, जो भिन्न-भिन्न ध्र्म-संस्कृतियों को मानने वाले हैं, जिसमें एक ईसाई, दूसरा यहूदी और तीसरा मुस्लिम समुदाय से है। ये मसला येरूशलम से जुड़ा हुआ है। तीनों धर्मिक समुदाय के लोगों की आस्था इस क्षेत्रा से जुड़ी हुई है। इन तीनों समुदायों में सबसे बड़े और शक्तिशाली समुदाय का प्रतिनिध्त्वि ईसाई करते हैं जो आर्थिक, विज्ञान एवं तकनीक की दृष्टि से कापफी समृ(शाली हैं और विश्व की कमान उन्ही के हाथों में है। दूसरा समुदाय यहूदियों का है, उनकी स्थिति अप्रवासियों जैसी है, जिन्होंने बाहर रहकर अपनी स्थिति सुधरी और बाद में

उनकी इच्छा इस क्षेत्रा में बसने की हुई। इन अप्रवासी लोगों ने अमरीकी सहायता से संगठित होकर इस क्षेत्रा पर अपना कब्जा जमाया। 1948 में पहली बार यहूदियों ने इस क्षेत्रा में प्रवेश किया। अब चूंकि पिफलिस्तीनी लोग इस क्षेत्रा में पहले से रह रहे थे, इस प्रक्रिया का प्रतिरोध करने लगे। स्वाभाविक रूप से बसे -बसाये घर को उजाड़कर नये लोगों को जबरन प्रतिस्थापित करना अनुचित है। पिफलिस्तीनियों का प्रतिरोध इन्हीं कारणो से है।

एक ओर जहां एक समृ(शील राष्ट्र की छत्राछाया में पिफलिस्तीनियों को उनके मूल क्षेत्रा से उजाड़ा जा रहा है, वहीं दूसरी ओर इस क्षेत्रा के हिंसक प्रतिरोध को किसी खास धर्मिक समूह की आतंकी कार्यवाई के साथ जोड़कर प्रचारित किया जा रहा है जो गलत है।

संयुक्त राष्ट्र के प्रस्ताव-242 के अनुसार पिफलिस्तीन और इजराइल -दोनों के लिए एक सीमा निर्धरित की गयी थी, लेकिन इजराइल की भूख इससे भी समाप्त नहीं हुई तथा उसने आस-पास के अन्य क्षेत्रों पर भी अपना कब्जा जमा लिया। अब स्थिति ये है कि पिफलिस्तीनी अपने मूल क्षेत्रा से कापफी दूर खदेड़े जा चुके हैं। जिस गाजा-पट्टी और वेस्ट बैंक की बात बार-बार उठती है, दरअसल, गाजा-पट्टी मिस्र जार्डन का हिस्सा है, इजराइल ने 1967 में यु(के के द्वारा अपना अध्पित्य स्थापित कर लिया था। बाद में इजराइल ने इस क्षेत्रा पर पिफलिस्तीनियों को बसने की इजाजत तो दी, लेकिन भय और आतंक की कार्यवाई आज तक जारी है। वे अपनी इच्छानुसार इस क्षेत्रा में घुसकर हिंसात्मक कार्रवाई को अंजाम देते हैं। पश्चिमी यूरोप के देश एवं अमरीका को इजराइलपरस्ती ने इन घटनाओं को और भी बढ़ाया है।

स्रोतः जवाहर लाल नेहरू विश्वविद्यालय दिल्ली के मध्य ऐशिया अध्ययन केन्द्र में अध्यापनरत प्रोपफेसर-महमूद आलम के साथ 21 अक्टूबर 2011 को व्यक्तिगत रूप से बातचीत पर आधरित।

20 सिंह का भाषण, *संख्या* 5, पृ. 1

21 *डिक्लेरेशन संख्या* 6, पृ. 4.

22 अंजन राय, ष्ब्रोटम लाइन इज नेशलन इन्टरेस्टर् *इंडियन करेन्ट्स,* 3-9 अगस्त, 2009, पृ. 32.

23 सिंह का भाषण, *संख्या* 5, पृ. 3.

अप्रैल 2008 में नई दिल्ली में भारत-अप्रफीका मंच सम्मेलन का आयोजन किया गया। यह सम्मेलन भारत और अप्रफीका के मध्य कई संदर्भो में महत्वपूर्ण रहा। जैसे राजनीतिक, आर्थिक तथा सांस्कृतिक आदान-प्रदान बढाने के लिए। 14 अप्रफीकी देशों तथा अप्रफीकी संघ के आयोग ने इस सम्मेलन में भाग लिया। दो दिवसीय सम्मेलन में दिल्ली घोषणा पत्रा पारित किया गया। इसके साथ ही भारत-अप्रफीका सहयोग स्थापित करने के लिए एक रूपरेखा भी स्वीकार की गई ताकि अप्रफीका महाद्वीप तथा भारत के मध्य ऐतिहासिक और सांस्कृतिक सहयोग को और बढाया जा सके। इन दोनों ही दस्तावेजों में भारत-अप्रफीका सम्बन्धें के सक्रिय संचालन के लिए एक यथार्थवादी दृष्टिकोण को भी अपनाया गया ताकि 21वीं शताब्दि की चुनौतियों का मुकाबला किया जा सके।

पूर्ण विवरण के लिए देखेंऋ के. मैथ्यूज, फ्इंडिया अपफीका को-ऑपरेशनः ए स्ट्रेटेजिक वीजन,र *अप्रफीका क्वाटरली,* वा. 5, न. 1, विशेष संस्करण, 2011. भारत और अप्रफीका के ऐतिहासिक तथा वर्तमान संबन्धें की दशा एवं दिशा के लिए देखें, ललित मानसिंह, फ्नॉट्स टूवर्ड्स इंडियाज न्यू अप्रफीका पॉलिसी, *अप्रफीका क्वाटरली,* वॉ. 48, न. 4, 2008-9. व संजीव भाटिया, फ्मूवींग प्रफॉम वीजन टू एक्शन,र *अप्रफीका क्वाटरली,* वा. 15, न.1, विशेष संस्करण, 2011.

24 पफाइनल डाक्यूमेंट्स, *संख्या* 14, चैप्टर ĳĳĳ रीजनल एण्ड सब-रीजनज पालिटिकल इश्यूज, ह्यूमन राइट्स एण्ड पफंडामेंटल प्रफीडम्स, पृ. 91-98.

25

26 डाक्यूमेंट्स *संख्या* 14, चैप्टर ĳĳĳ डिवलेपमेंट, सोशल एण्ड ह्यूमल राइट्स इश्यूज, करेंट ग्लोबल क्राइसिस, इन पार्टीकूलर द वर्ल्ड पिफनेनसियल एण्ड इकॉनामिक-क्राईसिज, पृ. 75.

27 दुबे, *संख्या* 4.

28 सि(ार्थ वर्दराजन, फ्इंडियन सेज पिफनेनसियल क्राइसिस ग्रिव नैम न्यू रेलिवेन्स,र *द हिन्दू,* नई दिल्ली, 16 जुलाई 2009

29 *द इकॉनामिक टाइम्स*, नई दिल्ली, 16 जुलाई, 2009.

30 सिंह का भाषण, *संख्या* 5, पृ. 2.

31 सि(ार्थ वर्दराजन, फ्इंडियन पाकिस्तान पॉजिटिव ऑन टाकर *द हिन्दू*, नई दिल्ली, 16 जुलाई, 2009.

32 सि(ार्थ वर्दराजन फ्जाइंट स्टेटमेंट फ्रलोउड प्रफॉम मीटिंग ऑपफ प्राइम मिनिस्टर्सर *द हिन्दू*, नई दिल्ली, 17 जुलाई, 2009.

33 रीपू जॉय, फ्मनमोहन एण्ड बलूचिस्तान पिफस्कोः ए बैटर टुथ ;ज्तनजीद्ध इज बैटर दैन ए लाईर *इंडियन करेंट*, 3-9 अगस्त, 2009, पृ. 28.

34 फ्डायलॉग अभी नहीः लेकिन पाक से नरमी के संकेत भीर, *नवभारत टाइम्स*, नई दिल्ली, 17 जुलाई, 2009.

भारत और पाकिस्तान के बीच पिछले 62 साल में दर्जनों दस्तावेजों पर हस्ताक्षर हुए हैं परन्तु जैसी भूल शर्म-अल-शेख में हुई है, पहले कभी नही हुई। ताशकंद, शिमला, इस्लामाबाद और 2006 में हवाना समझौतों में भी भारत ने अपनी उचित और अनुचित रियायतें पाकिस्तान को दी हैं, परन्तु 16 जुलाई 2009 का संयुक्त वक्तव्य भारतीय कूटनीतिक इतिहास का अत्यंत विचित्रा संकेतक रहा। फ्आतंकवाद के खिलापफ कार्यवाही को कम्पोजिट डायलॉग अर्थात समग्र वार्ता प्रक्रिया की राह में व्यवधन नहीं बनने दिया जाएगार यह कहना ही भारत के विरु(जाता है। दूसरे इस इस्तावेज में बलूचिस्तान का संदर्भ आना भी विचित्रा रहा। पाकिस्तान सरकार ने बलुचिस्तान में भारतीय हस्तक्षंप के जो आरोप लगाए हैं, इस दस्तावेज ने उन्हें औपचारिक रूप दे दिया। संपूर्ण विवरण के लिए देखें वेदप्रताप वैदिक, फ् कूटनीतिक भूल सुधर का साहस, र *नवभारत टाइम्स*, नई दिल्ली, 20 जुलाई, 2009.

भारत-पाकिस्तान समग्र वार्ता के आठ महत्वपूर्ण बिन्दू

भारत-पाकिस्तान के बीच शान्ति वार्ता का सूत्रापात 1997 में मालदीव की राजधनी माले में सम्पन्न हुए दक्षेश शिखर सम्मेलन में हुआ। इसका प्रथम चक्र 1998 में सम्पन हुआ। जिसके प्रमुख बिंदु इस प्रकार हैं:-

- पाकिस्तान की चिन्ता का प्रमुख विषय कश्मीर है।: परन्तु क्या आज यह विषय कश्मीर की जनता के अध्किारों, एवं उनकी स्वायत्तता तथा क्षेत्रिाय हस्तांत्राण में जयादा बड़ा विषय नहीं बन गया है।
- शान्ति एवं सुरक्षा / विश्वास बहाली के मानकः यह भारत की प्रमुख चिन्ता आतंकवाद के लिए गुप्त भाषा है। परन्तु परमाणु सुरक्षा मानक भी उतने ही महत्वपूर्ण हैं।
- तुलबुल / वुल्लर बांधः यह वास्तविक जल विवाद है जिसका विस्तार विभिन्न संयुक्त परियोजनाओं में हो सकता है, पाकिस्तान के लिए यह पीड़ादायक हैं।
- **fl;kfpu%** ikfdLrku dk dguk gS fd ;g elyk 2006 esa gh gy gks tkuk Fkk] ijUrq Hkkjr us vius lSU; ncko ds dkj.k blls vius dne fiNs gVk fy,A
- **ljfØd%** lEHkor;k ;g eqn~nk lcls vklkuh ls gy gks ldrk gS] vxj blds ihNs py jgh jktuhfr lekIr gks tk,A eq'kjiQZ&flag ds gLrk{kj u djus ls ;g elyk gy gksus ls jg x;kA
- **u'khys inkFkksZa dh rLdjh%** bl leL;k dk lek/ku nksuksa ns'kksa dh iqfyl }kjk ikjLifjd lg;ksxkRed dk;Z djus ls fd;k tk ldrk gSA
- **tulEidZ%** ljgn ds nksuksa vksj jgus okyh turk ds fy, ;g lcls izeq[k fo"k; gS] ijUrq tu&lEidZ ds fy, ok/k ckMZj ds xsV f'k?kz [kqyrs gSa vkSj cUn Hkh gks tkrs gSaA
- **vkfFkZd lg;ksx%** nksuksa gh ns'k 'kS{kf.kd lkfgR; ds ekè;e ls dkiQh /u vftZr djrs gSaA ijUrq Hkkjr vkSj ikfdLrku LokHkkfod :i ls laj{k.koknh ns'k gSaA vFkkZr bl lg;ksx ls cpuk pkgrs gSa pkgs lcdqN Bhd&Bkd jgsA ijUrq fiQj Hkh nksuksa ns'kksa ds eè; vf/d O;kikj dh vk'kk ugha dj ldrsA

lzksr% ¶,sV ikWbaV~l vkWiQ b.Mks&ikd dEiksftV MkW;ykx¶ *fgUnqLrku VkbEl*] ubZ fnYyh] 19 tqykbZ]2010